अध्याय 3: पहली बूँद

विषय-सूची

4 प्रश्नावली · 7 प्रश्न

प्रश्नावली 3.1	मेरी समझ से	2 प्रश्न
प्रश्नावली 3.2	मिलकर करें मिलान	1 प्रश्न
प्रश्नावली 3.3	पंक्तियों पर चर्चा	2 प्रश्न
प्रश्नावली 3.4	सोच-विचार के लिए	2 प्रश्न

प्रश्नावली 3.1 — मेरी समझ से

प्रश्न 1

नीचे दिए गए प्रश्न का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (✦) बनाइए— कविता में 'नव-जीवन की ले अँगड़ाई' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है? (क) बादल (ख) अंकुर (ग) बूँद (घ) पावस

हल

सही उत्तर: (ख) अंकुर।

कविता की पंक्ति है — 'अंकुर फूट पड़ा धरती से, नव-जीवन की ले अँगड़ाई।'

पहली बारिश की बूँद गिरते ही धरती से अंकुर (नया पौधा) फूट पड़ता है — यह नए जीवन के जागने की अँगड़ाई है।

इसलिए 'नव-जीवन की ले अँगड़ाई' अंकुर के लिए प्रयुक्त हुआ है।

उत्तर: (ख) अंकुर

प्रश्न 2

नीचे दिए गए प्रश्न का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (✦) बनाइए— 'नीले नयनों-सा यह अंबर, काली पुतली-से ये जलधर' में 'काली पुतली' है— (क) बारिश की बूँदें (ख) नगाड़ा (ग) वृद्ध धरती (घ) बादल

हल

सही उत्तर: (घ) बादल।

कवि ने आकाश की तुलना नीली आँखों से की है। जिस प्रकार आँख में नीली आँख के बीच काली पुतली होती है, उसी प्रकार नीले आकाश में काले बादल हैं।

'जलधर' अर्थात् जल को धारण करने वाले — यहाँ बादल ही जलधर हैं और वे काली पुतली के समान हैं।

अतः 'काली पुतली' बादल के लिए प्रयुक्त हुई है।

उत्तर: (घ) बादल

प्रश्नावली 3.2 — मिलकर करें मिलान

प्रश्न 1

कविता की कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन पंक्तियों में कुछ शब्द रेखांकित हैं। दाहिनी ओर रेखांकित शब्दों के भावार्थ दिए गए हैं। इनका मिलान कीजिए— कविता की पंक्तियाँ | भावार्थ 1. आसमान में उड़ता सागर, | 1. मेघ-गर्जना लगा बिजलियों के स्वर्णिम पर | 2. बजा नगाड़े जगा रहे हैं, | 2. बादल बादल धरती की तरुणाई | 3. नीले नयनों सा यह अम्बर, | 3. हरी दूब काली पुतली-से ये जलधर। | 4. वसुंधरा की रोमावलि-सी, | 4. आकाश हरी दूब पुलकी-मुसकाई। |

हल

1. 'आसमान में उड़ता सागर, लगा बिजलियों के स्वर्णिम पर' — यहाँ रेखांकित शब्द 'सागर' है। समुद्र का वाष्पीभूत जल बादल बनकर आकाश में उड़ता है — इसलिए यहाँ 'सागर' का भावार्थ है → 2. बादल।
2. 'बजा नगाड़े जगा रहे हैं, बादल धरती की तरुणाई' — यहाँ रेखांकित शब्द 'नगाड़े' है। बादलों की गड़गड़ाहट नगाड़े बजाने जैसी लगती है — यह मेघ-गर्जना का चित्रण है → 1. मेघ-गर्जना।
3. 'नीले नयनों सा यह अम्बर, काली पुतली-से ये जलधर' — यहाँ रेखांकित शब्द 'अम्बर' है। नीला आकाश नीली आँखों जैसा है → 4. आकाश।
4. 'वसुंधरा की रोमावलि-सी, हरी दूब पुलकी-मुसकाई' — यहाँ रेखांकित शब्द 'रोमावलि' है। धरती के रोएँ (रोमावलि) जैसी हरी दूब घास है → 3. हरी दूब।

उत्तर: 1→2 (बादल), 2→1 (मेघ-गर्जना), 3→4 (आकाश), 4→3 (हरी दूब)

प्रश्नावली 3.3 — पंक्तियों पर चर्चा

प्रश्न 1

कविता में से चुनी गई निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए— "आसमान में उड़ता सागर, लगा बिजलियों के स्वर्णिम पर, बजा नगाड़े जगा रहे हैं, बादल धरती की तरुणाई।"

हल

इन पंक्तियों में कवि ने बादलों का अत्यंत सुंदर चित्रण किया है।
'आसमान में उड़ता सागर' — समुद्र का जल वाष्प बनकर आकाश में उठता है और बादल का रूप लेता है। कवि इसे 'आसमान में उड़ता सागर' कहता है।
'लगा बिजलियों के स्वर्णिम पर' — बादल जब बिजली चमकाते हुए आकाश में आते हैं, तो ऐसा लगता है जैसे सागर ने सुनहरे पंख लगाकर उड़ान भरी हो।
'बजा नगाड़े जगा रहे हैं' — बादलों की गड़गड़ाहट नगाड़े बजाने जैसी लगती है।
'बादल धरती की तरुणाई' — बादल अपनी गर्जना और वर्षा से धरती में नई जवानी और ताज़गी जगाते हैं।
ये पंक्तियाँ बताती हैं कि बादलों का आना धरती के लिए उत्सव जैसा है।

उत्तर: बादल समुद्र के जल को वाष्प रूप में लेकर बिजली के सुनहरे पंख लगाकर आकाश में उड़ते हैं और नगाड़े जैसी गर्जना से धरती में नई जवानी और उत्साह भर देते हैं।

प्रश्न 2

कविता में से चुनी गई निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए— "नीले नयनों-सा यह अंबर, काली पुतली-से ये जलधर। करुणा-विगलित अश्रु बहाकर, धरती की चिर-प्यास बुझाई।"

हल

इन पंक्तियों में कवि ने आकाश, बादल और वर्षा का मार्मिक चित्रण किया है।
'नीले नयनों-सा यह अंबर' — नीला आकाश किसी की नीली आँखों जैसा है।
'काली पुतली-से ये जलधर' — बादल (जलधर = जल धारण करने वाले) उस आँख की काली पुतली जैसे हैं। जैसे पुतली आँख के बीच में होती है, वैसे ही बादल नीले आकाश में छाए हैं।
'करुणा-विगलित अश्रु बहाकर' — जैसे दयालु हृदय करुणा से पिघलकर आँसू बहाता है, वैसे ही बादल वर्षा की बूँदें बरसाते हैं।
'धरती की चिर-प्यास बुझाई' — इस वर्षा से धरती की बहुत पुरानी (चिर) प्यास बुझती है।
ये पंक्तियाँ बताती हैं कि बादल की वर्षा करुणामयी है — वह प्यासी धरती पर दया करके आँसू (बारिश) बहाता है।

उत्तर: नीला आकाश नीली आँखों जैसा है और उसमें काले बादल पुतली जैसे हैं। बादल करुणा से भरकर वर्षा (अश्रु) बहाते हैं और धरती की चिरकालीन प्यास बुझाते हैं।

प्रश्नावली 3.4 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

कविता को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित के बारे में पता लगाकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए—
बारिश की पहली बूँद से धरती का हर्ष कैसे प्रकट होता है?

हल

कवि गोपालकृष्ण कौल ने पहली बारिश से धरती के हर्ष को कई रूपों में चित्रित किया है—
1. अंकुर का फूटना: 'अंकुर फूट पड़ा धरती से, नव-जीवन की ले अँगड़ाई।' — पहली बूँद गिरते ही धरती से अंकुर फूट पड़ता है, जो नए जीवन के जन्म का प्रतीक है।
2. अधरों पर अमृत: 'धरती के सूखे अधरों पर, गिरी बूँद अमृत-सी आकर।' — सूखी धरती के लिए पहली बूँद अमृत जैसी है।
3. हरी दूब की मुसकान: 'वसुंधरा की रोमावलि-सी, हरी दूब पुलकी-मुसकाई।' — धरती के रोमावलि (रोएँ) जैसी हरी दूब खुशी से पुलकित होकर मुसकाती है।
4. बुझी प्यास: 'धरती की चिर-प्यास बुझाई।' — धरती की बहुत पुरानी प्यास बुझती है।
5. शस्य-श्यामला बनने की ललक: 'बूढ़ी धरती शस्य-श्यामला, बनने को फिर से ललचाई।' — बूढ़ी धरती फिर से हरी-भरी (शस्य-श्यामला) बनने को तरस उठती है।
इस प्रकार पहली बूँद से धरती का हर्ष — अंकुरण, अमृत-बोध, हरियाली की मुसकान और बुझती प्यास के रूप में प्रकट होता है।

उत्तर: पहली बारिश की बूँद से धरती का हर्ष इस प्रकार प्रकट होता है — अंकुर फूट पड़ता है, सूखे अधरों पर अमृत-सी बूँद गिरती है, हरी दूब पुलकित होकर मुसकाती है और धरती की चिर-प्यास बुझती है।

प्रश्न 2

कविता को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित के बारे में पता लगाकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए—
कविता में आकाश और बादलों को किनके समान बताया गया है?

हल

कवि ने कविता में आकाश और बादलों की तुलना इस प्रकार की है—
आकाश (अंबर) की तुलना: 'नीले नयनों-सा यह अंबर' — आकाश को नीली आँखों (नयनों) के समान बताया गया है।
बादलों (जलधर) की तुलना: 'काली पुतली-से ये जलधर' — बादलों को आँख की काली पुतली के समान बताया गया है।
इस प्रकार कवि ने आकाश और बादलों को मिलकर एक विशाल आँख का रूप दिया है — नीला आकाश आँख है और उसमें बादल काली पुतली हैं।
इसके अतिरिक्त, बादलों को 'उड़ता सागर' भी कहा गया है — 'आसमान में उड़ता सागर, लगा बिजलियों के स्वर्णिम पर' — अर्थात् बादल उस समुद्र के समान हैं जो बिजली के सुनहरे पंख लगाकर आकाश में उड़ रहा है।

उत्तर: कविता में आकाश को नीली आँखों (नीले नयनों) के समान और बादलों को आँख की काली पुतली तथा उड़ते हुए सागर के समान बताया गया है।